



इतिहास के आइने में राजस्थान के प्रसिद्ध लोक देवता

कादाम्बिनी सिंह

एम. ए. इतिहास, नेट, वनस्थली विद्यापीठ, राजस्थान, भारत।

प्रस्तावना

राजस्थान का इतिहास वीरों की वीरता और बलिदानों की घटनाओं से भरा पड़ा है। हर युग में महान पुरुष अवतरित हुए हैं जो जाति पांति जन्म व वर्ण के भेद को नहीं मानते हुए समस्त मानव जाति को अपने समान मानते आये हैं। वीर पुरुष जन कल्याण की भावना से अपने जीवन में त्याग, बलिदान, सेवा और उदारता आदि गुणों को अपना कर, अमर बन जाते हैं। ऐसे पुरुष देश, समाज और धर्म की मर्यादाओं का पालन करते हुए, अपने संपूर्ण जीवन को लोकहित में लगा देते हैं। उनके चरित्र उन्हें आदर्श बना देते हैं। वे अपने कार्यों के कारण दूसरे के लिए उदाहरण स्वरूप बन जाते हैं। ऐसे लोकवीर, लोकदेवता के रूप में पूज्य हो जाते हैं।

समाज में व्यवस्थाएं बनाए रखने के लिए समय-समय पर कुछ नियम बनते रहते हैं। इन नियमों में आवश्यकता पड़ने पर कुछ परिवर्तन भी होता रहता है। वह नियम मानव मात्र के लिए लाभदायक हैं, यह ध्यान में रखा जाता है। इन नियमों का आधार जाति अथवा वर्ण का भेद नहीं होता है। ऐसे मानव हितकारी नियमों का धारण करना अर्थात् उनके अनुसार चलना प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य है। इनका पालन लोक धर्म का मानना है। इन नियमों के पालन में जो व्यक्ति अटूट साहस दिखाता है, वह आदर्श के रूप में प्रसिद्ध हो जाता है। यही आदर्श पुरुष समाज में एक लोकदेवता के रूप में मान्य हो जाता है।

आदर्श वीर अपनी प्रसिद्धि के कारण लोकप्रिय हो जाता है। दंतकथाओं और विरुद गाने वालों द्वारा उनकी चरित्रगाथा प्रसार तथा प्रचार पाती रहती है। कई कल्पित और अमानवीय घटनायें उनके जीवन के साथ जुड़ जाती हैं। उस भू-भाग में उनके पराक्रम के गीत बढ़-बढ़कर गाए जाने लगते हैं। मौखिक परंपरा के कारण कथाओं का प्रसार होते समय कई अंश छूट जाते हैं, कई अंशों का रूप बदल जाता है तो कई अन्यों की कथाओं के अंश जुड़ जाते हैं। यह घटना, बढ़ना और परिवर्तन होने का सिलसिला लगातार चालू रहता है। इसी कारण इसे मौखिक साहित्य का नाम दिया जाता है जिसका रचियता और रचनाकाल अज्ञात रहता है। यही कारण है कि लोक देवताओं के संबंध में प्रमाणिक इतिहास खोज निकालना कठिन हो जाता है। मौखिक परंपरा वाले लोक साहित्य के आधार पर ही इन वीर आदर्श पुरुषों का जीवन चरित्र खोजना पड़ता है।

इन आदर्श वीर पुरुषों के जन्म स्थान, निवास स्थान, कार्य क्षेत्र और देहांत के स्थान भी प्रसिद्ध हो जाते हैं। उनकी स्मृति में ऐसे स्थानों पर कुछ निर्माण कार्य भी हो जाता है। इनके प्रशंसक अथवा भक्त ऐसे स्मारकों को तीर्थस्थल की मान्यता दे देते हैं। वहां पर समय-समय पर मेले भी लगने लग जाते हैं, तो भी और अज्ञानी लोग चमत्कारों की झूठी कथायें इन वीर पुरुषों के स्मारकों के साथ जोड़ देते हैं जिससे यात्रियों की भीड़ चढ़ावा चढ़ाकर आमदनी बढ़ाती रहती है। करामात और चमत्कार की आशा में भोली जनता

हजारों की संख्या में वहां पर आकर्षित होती रहती है। कि वीर आदर्श पुरुष अमुक देवता का अवतार है। जब अवतार की कल्पना प्रचारित की जाती है तो उसके संगी साथी भी अवतार के अंश रूप घोषित कर दिये जाते हैं।

ऐसे लोक देवताओं का इतिहास अपने सही रूप में समय के साथ विलुप्त हो जाता है। परंतु मौखिक रूप में उनके जीवन और उनकी शक्तियों का बखान तथा उससे संबंधित स्थानों का महत्व लगातार प्रचारित होता रहता है। समाज में हर काल में आदर्श पुरुष तो होते ही हैं। परंतु चरम सीमा का त्याग व साहस का प्रदर्शन करने वाले विरले पुरुष ही लोक देवता का सम्मान प्राप्त करते हैं। भले ही समय के साथ उनका सही इतिहास समाज भूल जावे परंतु उनके आदर्श चरित्र सदैव स्मरण करने और अनुकरण करने के विषय रह जाते हैं।

ऐसे आदर्श पुरुषों के सदकार्य उनके पराक्रम होते हैं। जिन्हें राजस्थानी भाषा में पवाड़ा कहते हैं। यह पवाड़े गीत के रूप में लोक समुदाय रचता है जिसमें वीर पुरुष के पराक्रमों (चरितों) का गुणगान होता है। इन चरित्रों को जब गद्य रूप में कहानी के रूप में कहते हैं। तो उसे राजस्थानी में बात कहते हैं। इन चरितों की घटनाओं का कमबद्ध (धारा प्रवाह) चित्रण किसी पट्ट (कपड़े) पर करते हैं तो उस चित्रित किसी पट्ट को राजस्थानी में फड़ कहते हैं इन चित्रित घटनाओं को समझाकर अथवा गीतों द्वारा बखान कर संकेत किया जाता है तो उसे फड़ बाचना कहते हैं। फड़ वाचने का काम भोपे करते हैं। रस्सियों के सहारे चित्रित फड़ को बांधकर दिवाल की तरह खड़ी तान दिया जाता है। भोपा अपनी वेषभूषा पहिनकर, अपनी स्त्री (भोपी) के संग फड़ के समाने आता है। वह लंबा लाल अंगरखा, गोटे किनारी वाला पहिनकर, सर पर पगड़ी बांधता है। पैरों में घुघरू और बांये हाथ में तात का बाजा (रावण हत्था) लिए रहता है। वह घूम-घूमकर, पांवां का ठपका देकर, बाजे पर तान निकालकर विरुद गाता है। वह जिस घटना का वर्णन करता है उस पर भोपी दिए (दीपक) द्वारा प्रकाश डाली है। भोपी हाथ में तेल का दिया लटकाएं रहती है। भोपे के अलाप में गीत की टेक को वह तार स्वर में दुहराकर अलाप भरती है। वह बांचना देर रात तक चलता है। गांवों की तारा छाई रात के शांत वातावरण में लोक वीरों का गुणगान बहुत भारी प्रभाव सुनने वालों पर डालता है। इन लोक वीरों के पवाड़े और फड़े इनके चरित को अमर बना देती है। ज्ञान और मनोरंजन का यह अपूर्व साधन है।

राजस्थान के लोक साहित्य में वीर पुरुषों के जो चरित गीतों, पवाड़ों फड़ों आदि द्वारा बखाने जाते हैं उनसे कुछ लाभप्रद और शिक्षाप्रद निष्कर्ष काले जा सकते हैं। इन लोकमान्य देवताओं के प्रशंसक अथवा भक्त सभी जाति और मत-मतांतर वाले होते हैं। जाति और पांति का भेद भाव इनमें नहीं बदला जाता। सभी प्रांतों में बिना किसी वर्ण भेद के इन लोक देवताओं की मान्यता ग्रामीण समाज में बहुत अधिक है। यह अपने उपदेशों में सरल और

हितकारी बातों पर जोर डालते हैं। किसी अन्य मत अथवा धर्म की निंदा नहीं करते हैं। इनका संबंध किसी मर्यादा अथवा प्राचीन धार्मिक शास्त्र से नहीं है। मनुष्य मात्र को विकार रहित जीवन व्यतीत करने का मार्ग बताते हैं। सत्य, दया, अहिंसा, दान, परोपकार आदि गुणों का प्रचार करते हैं। धर्म अथवा जाति के विरोध में कोई शत्रु भाव नहीं रखते हैं। ऐसे उपदेशों में मनुष्य से भेद भाव रखना अथवा छुआछूत रखना असंभव है। हिंदु समाज के यह अवगुण, इन लोक देवताओं के उपदेशों से दूर हो गए हैं। इसके कारण सभी जाति के लोग एक साथ मिलकर भजन-पूजन और प्रसाद ग्रहण करने में हाथ बंटते हैं।

इन लोक देवताओं की भले ही भिन्न-भिन्न स्थानों पर गदियां (केंद्र) हों परंतु उपदेश के रूप में सभी एक ही भांति का मानव कल्याणकारी संदेश देते हैं। सच्चे रूप में यह संत का कार्य करते हैं जो मनुष्य ही नहीं, जीव मात्र के कल्याण की कल्पना रखते हैं। जाति, जन्म रूढ़िवादी धार्मिक मान्यताओं से हटकर, इन देवताओं का संदेश है। इनके नाम पर चली जो वाणियां मिलती हैं वे सारी निर्गुण भक्ति का उपदेश देती हैं। सारे संसार व जीवों को बनाने वाला एक ईश्वर है जो परम शक्तिमान है। वह अच्छे तथा बुरे कामों का फल देता है। पापी को दुःख भोगना पड़ता है और पुण्य करने वाला सुख भोगता है। मानव धर्म के मुख्य लक्षण इन उपदेशों में प्रकट हो जाते हैं। अच्छे जीवन बिताने के लिए मानव को काम, क्रोध, लोभ, मद, मोह, अहंकार, ईर्ष्या आदि विकारों से दूर रहने की सीख देते हैं। ये सारे उपदेश उनकी वाणियों में भरे पड़े हैं जो साधारण बोलचाल की भाषा में हैं। इनके समस्त उपदेशों का सार दो पंक्तियों में कहा जा सकता है कि उपकार से बढ़कर पुण्य नहीं और परपीड़ा से बढ़कर पाप नहीं।

इन लोक देवताओं की गुणगाथा ज्यों-ज्यों फैलने लगी त्यों-त्यों समय के साथ इनके जीवन चरित्र में अलौकिक घटनायें जुड़ने लगी। इसका परिणाम यह हुआ कि ये शक्ति के केंद्र माने जाने लगे और अंध विष्वास अथवा अज्ञानी लोगों ने इनके गुणों के पालन को भूलकर इनकी पूजा करने लगे। इन वीर पुरुषों ने परिश्रम और त्याग से जो कार्य सफल किए वे इनके भक्त केवल इनका नाम जपकर, प्राप्त करना चाहने लगे। रोगी और निर्बल स्वास्थ्य लाभ करने तथा निर्धन भक्त शीघ्र धनवान बन जाने हेतु इनकी मनौती मानने लगे। इनकी मृत्यु स्थल, तीर्थ बन गए और वंहा की मिट्टी का तिलक होने लगा। यह सब अंध विष्वास का फल है। इन वीर पुरुषों की कथनी और करनी में अंतर नहीं रहा परंतु इनके भक्तों में केवल कथनी ही रह गई।

इन लोक देवताओं की धातु के पतरे पर बनी मूर्तियां अथवा प्रतीक (चिन्ह) जिन्हें लोक भाषा में फूल कहते हैं। लोग पहिने लगे। इन्हें वे संकट निवारण का कवच मानने लगे। रात्रि भर जाग कर इनका यश गान गाते, जिसे जम्मा कहते हैं और फल की आशा करने लगे। कर्म करने से दूर रहने और सदाचार का पालन नहीं करने से कोई फल अंध विष्वासी लोगों को नहीं मिला। शिक्षा के प्रसार के साथ ज्ञान और विवेक का प्रचार अब होने लगा है। इनके फलस्वरूप अंध श्रद्धा का नाश भी होने लगा है। राजस्थान के गांवों में अनेक देवताओं के स्थान हैं। यह देवता भी जाति और स्थान विषेय के कारण संख्या में बहुत ज्यादा हैं किन्तु यहा हम मुख्य पाँच लोक देवताओं का विवरण प्रस्तुत है—

बाबा रामदेव

राजस्थान एवं गुजरात में पीर और अवतारी बाबा के रूप में प्रसिद्ध बाबा रामदेव का जन्म सन् 1932 में तंवर वंश में जैसलमेर के रूपीजा गांव में हुआ। जहाँ अब रामदेवरा धाम है। उन्होंने समाज

सुधार, अछूतोद्धार, जाति प्रथा उन्मूलन के लिए कार्य किया। साथ ही पश्चिमी राजस्थान में धर्मांतरण को भी रोका। उनका स्थान हिंदू-मुस्लिम सद्भाव का भी प्रतीक है जहाँ हर वर्ष भाद्रपद शुक्ल द्वितीय से एकादशी तक विषाल मेला आयोजित होता है।

गोगाजी

गोगाजी को राजस्थान के अलावा गुजरात, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश एवं पंजाब में भी बड़ी संख्या में श्रद्धालु पूजते हैं। नागवंशीय चौहान गोगाजी का जन्म 946 ई. में ददरेवा (चुरु) में हुआ था। जहाँ के शासक उनके पिता थे। सर्पदंश के उपचार के लिए उनका समाधि स्थल गोगामेड़ी (हनुमानगढ़) विख्यात है। भाद्रपद के कृष्ण पक्ष की नवमी को गोगानवमी मनाई जाती है एवं गोगामेड़ी में हर वर्ष विषाल मेला लगता है।

तेजाजी

नागों के देवता के रूप में तेजाजी भी प्रसिद्ध हैं। उनका जन्म 1574 ई. में खड़नाल (नागौर) में जाट समुदाय में हुआ था। वे बचपन से ही ईश्वर आराधना एवं जनकष्ट निवारण में संलग्न रहे। ब्यावर, अजमेर सहित जगह-जगह उनके स्थान बने हुए हैं। यहाँ सर्पदंश से पीड़ित व्यक्तियों को भोषों के पास विष चूसकर उपचार के लिए लाया जाता है। उनकी पुण्य तिथि पर नागौर जिले में भाद्रपद शुक्ल पंचमी से पूर्णिमा तक विषाल मेला भी भरता है।

पाबूजी

जोधपुर जिले के कोलू गांव में राठौड़ वंश में जन्म लेने वाले पाबूजी अस्पृश्यता निवारण एवं सद्भाव-समरसता बढ़ाने के लिए प्रख्यात रहे। वे गौ-रक्षा के लिए संघर्ष करते हुए वीर गति को प्राप्त हुए थे। उन्हें लक्ष्मणजी का अवतार भी माना जाता है। ऊंट के अस्वस्थ होने पर भी पाबूजी की पूजा की जाती है। कोलू गांव में उनकी स्मृति में हर साल विषाल मेला आयोजित होता है।

देवनारायण जी

गुर्जर बगडावत वंश में 1243 ई. में आलासेरी डूंगरी (भीलवाड़ा) में उनका जन्म हुआ। वे जनकल्याण में संलग्न रहे एवं अनेक सिद्धियां प्राप्त की। गुर्जर समाज उन्हें भगवान विष्णु के अवतार के रूप में पूजता है। देहमाली गांव में भाद्रपद शुक्ल सप्तमी को उनके समाधि स्थल पर देवधाम (टोंक) में भी मेला आयोजित होता है। अजमेर, भीलवाड़ा चित्तौड़ एवं टोंक में देवनारायण जी के अनेक देवरे भी हैं।

भर्तृहरिजी

अलवर शहर से करीब 30 किमी. दूर जयपुर मार्ग पर रमणीक धार्मिक स्थल पर भर्तृहरि बाबा का धाम है। वे उज्जैन के शासक थे लेकिन राजपाट और मोह माया त्याग कर योगीराज बन गये। उन्होंने भर्तृहरि नीतिषतक की रचना की जिसमें उचित लोक आचरण की महत्वपूर्ण सीख हर वर्ष यहाँ लक्ष्मी मेले में बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं के अलावा नाथपंथी साधुओं का जमावड़ा लगता है। सारांशतः कहा जा सकता है कि राजस्थान में वीरता, त्याग, बलिदान, गोरक्षा, वचन पालन, सत्य व्रतधारी, परोपकार और गुणों को स्थापित करने वाले ऐतिहासिक पुरुषों में से कुछ अधिक प्रसिद्ध हो गये, जिन्हें सामान्य जनता ने बहुत सम्मान दिया और आदर प्रकट करने की भावना के कारण इन त्यागी पुरुषों को देव तुल्य मानने लगी जो कालान्तर में लोक देवता के रूप में पूजनीय हो गये। आज भी इन लोक देवताओं के प्रति राजस्थान की जनता

आस्था रखती है और इन लोक देवताओं की पवित्र भूमि पर पहुंच कर माथा टेकती है।

संदर्भ

1. ओझा, गोरीषंकर हीराचन्द – राजपूत कालीन, राजस्थान ग्रन्थागार, जोधपुर-2002।
2. ओझा, मधुसूदन – मत्स्य प्रदेश का इतिहास सीटी पैलेस म्यूजियम, जयपुर।
3. त्यागी, ओंकार सिंह – राजस्थान एक नजर, अरिहंत प्रकाशन, जयपुर।
4. जोशी, पिनाकी लाल- अलवर का इतिहास, हिन्द प्रेम मंदिर, अलवर।
5. शर्मा, गोपीनाथ – राजस्थान का इतिहास, शिवलाल अग्रवाल एण्ड कम्पनी, आगरा।
6. गहलोत, महावीर सिंह – राजस्थान के लोक देवता, युनिक ट्रेडर्स, जयपुर।